किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास
(EMOTIONAL DEVELOPMENT DURING ADOLESCENCE)

इस अवस्था में किशोर-किशोरियाँ बहुत संवेदनशील होते हैं। किशोरावस्था में एक बार फिर संवेगात्मक संतुलन बिगड़ जाता है। इस समय संवेगों में आँधी-तूफान जैसी प्रचण्डता और गति होती

है। इसीलिए किशोरावस्था को तूफान और तनाव की अवस्था कहा गया है। जीवन की किसी अन्य अवस्था में संवेगात्मक शक्ति का प्रवाह इतना भीषण नहीं होता जितना कि इस अवस्था में पाया जाता है। एक किशोर के लिए अपने संवेगों पर नियन्त्रण रखना बहुत कठिन होता है। यौन ग्रन्थियों के तेजी से क्रियान्वित होने और शारीरिक शक्ति में पर्याप्त विकास होने से बाल्यावस्था में पाई जाने वाली संवेगात्मक स्थिरता और शान्ति भंग हो जाती हैं। वे संवेगात्मक दृष्टि से बहुत चंचल और अस्थिर हो जाते हैं।

किशोरावस्था के संवेगात्मक विकास की प्रमुख विशेषताओं का निम्नवत् उल्लेख किया जा सकता है–

1. किशोरावस्था में संवेगों में अस्थिरता होने के कारण उसे समायोजन करने की समस्या का सामना करना पड़ता है। वह अनुकूल परिस्थितियों में प्रोत्साहन पाता है और प्रतिकूल परिस्थितियों में निराशा पाता है। यह निराशा आत्महत्या की भावना और क्रिया तक पहुँच जाती है। भारतीय मनोवैज्ञानिक **बी. एन. झा** के अनुसार–"किशोरावस्था का संवेगात्मक विकास इतना विचित्र होता है कि किशोर एक ही परिस्थिति में विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रकार का व्यवहार करता है। एक अवसर पर उसे उल्लास से भर देती है, वही परिस्थिति दूसरे अवसर पर उसे खिन्न कर देती है।"

2. किशोर का जीवन अत्यधिक भाव-प्रधान होता है। उसमें आत्मसम्मान का स्थायी भाव विकसित हो जाता है। वह किसी भी प्रकार अपने आत्मसम्मान पर लगी ठेस को बर्दाश्त नहीं कर पाता।

3. किशोरावस्था में काम-भावना एक पुनः तीव्र हो जाती है। किशोर में प्रेम संवेग बढ़ जाता है। वह प्रायः विषमलिंगी के प्रति प्रेम भाव प्रदर्शित करते हैं। यह काम प्रवृत्ति किशोर के संवेगात्मक विकास पर काफी अधिक प्रभाव डालती हैं। **बी. एन. झा** के अनुसार–"किशोरावस्था में बालक और बालिका, दोनों में काम-प्रवृत्ति अत्यधिक तीव्र हो जाती हैं तथा उनके संवेगात्मक व्यवहार असाधारण प्रभाव डालती हैं।"

4. किशोरावस्था में प्रेम, दया, क्रोध, सहानुभूति आदि संवेग स्थायी रूप से प्राप्त कर लेते हैं। किशोर इन पर नियन्त्रण नहीं रख पाता है। यही कारण कि अन्यायी व्यक्ति के प्रति वह शीघ्र ही क्रोधित हो जाता है तथा किसी दुःखी व्यक्ति को देखकर उसके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करता है।

5. किशोर में संवेगात्मक स्थिरता का सम्बन्ध उसकी शारीरिक शक्ति से होता है। सबल और स्वस्थ किशोर में संवेगात्मक स्थिरता तथा दुर्बल एवं अस्वस्थ किशोर में संवेगात्मक अस्थिरता देखने को मिलती है।

6. किशोर का जीवन कल्पनाशील होने के कारण दिवा स्वप्नों का होता है। वह दिवास्वप्नों में अपने संवेगों की अभिव्यक्ति करता है।

7. इस अवस्था में संवेगों का बाहुल्य होता है। वे अपनी रुझान के अनुसार जिस चरित्र से प्रभावित होते हैं, उसी चरित्र को अपनी जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। ये चरित्र कहानी, उपन्यास, सिनेमा, इतिहास, वर्तमान एवं भूतकालीन राजनीति या रिश्तेदार या पड़ोसी कहीं से भी हो सकते हैं। किशोर उन्हीं के आदर्शों के अनुसार अपना व्यवहार, बातचीत की शैली, कपड़े पहनने का तरीका या अन्य चीजों को ढालने लगते हैं।

8. सामाजिक समायोजन करने में किशोरों को एक विशेष तरह की समस्या का सामना करना पड़ता है। किशोरों को न तो बालक समझा जाता है और न ही वयस्क। वयस्क उन्हें अपने समूह में नहीं गिनते, बाल समूह अपनी गतिविधियों में उन्हें शामिल नहीं करता कि वे बड़े हैं। इससे वे बड़ी दुविधा की स्थिति में पड़कर अपने को समूह से बहिष्कृत मानने लगते हैं। ऐसे किशोरों में अपराध की प्रवृत्ति पैदा होने लगती है।

9. किशोरावस्था में जिज्ञासा की प्रवृत्ति पुनः प्रबल हो जाती है। वह किसी घटना अथवा वस्तु के बारे में 'क्या है ?' के उत्तर से सन्तुष्ट नहीं है, अपितु 'क्यों' और 'कैसे' के उत्तरों के पश्चात् ही अपने को सन्तुष्ट कर पाता है। इससे उसमें दार्शनिक, वैज्ञानिक खोज तथा सत्यान्वेषण की भावना का विकास होता है।